ISSN 2249-894X Impact Factor : 3.1402 (UIF) Volume - 5 | Issue - 3 | Dec - 2015

Review Of Research

साकेत का महाकाव्यत्व और वस्तु–विन्यास

प्रा. विठ्ठल केशवराव टेकाले
एस. एस. एम. कॉलेज, गंगाखेड,
जि. परभणी. (महाराष्ट्र)

महाकाव्य उसे कहा जाता है, जिस रचना का उद्देश्य महान हो। गुप्तजी का भी उद्देश महान ही है। गुप्तजी का उद्देश शायद उर्मिल के चरित्र को सामने लाना है। महाकाव्य के लक्षणों के आधार पर जब हम 'साकेत' का परिक्षण कसे हैं तो निम्मलिखित तथ्य हमारे सामने आते हैं और इसी के साथ 'साकेत' का महाकाव्यत्व सिध्द होता है।

1) मंगलाचरण –

किसी भी महाकाव्य की शुरूआत मंगलाचरण से होती है। शुरू में मंगलाचरण संस्कृत भाषा में हुआ करते थे। जैसे–महाकवि तुलसीने अपने महाकाव्य 'रामचरितमानस' की शुरूआत मंगलाचरण से की है। कवि गुप्तजीने भी 'साकेत' की शुरूआत मंगलाचरण से की है। यह मंगलाचरण हिन्दी में लिखा है।

अयि दयामयि देवि, सुखदे, सारदे,
इधर भी निज वरद–पाणि पसार दे।
दास की यह देह–तन्त्री सार दे,
रोम–तारों में नई झंकार दे।
बैठ, आ, मानस–मराल सनाथ हो,
भार–वाही कण्ठ–केकी साथ हो।
चल अयोध्या के लिए, सज साज तू,
माँ, मुझे कृतकत्य कर दे आज तू।

2) कथा –

महाकाव्य की कथा पुराण, वेद, या इतिहास की होनी आवश्यक है अथवा किसी चरित्र नायक की होनी चाहिए। 'साकेत' की कथावस्तु रामायण से ली गयी है। 'साकेत' की कथा राम–कथा है। 'साकेत' की कथा सुप्रसिध्द है। जिसे कविने 'साकेत' के मुखपृष्ठ पर इन शब्दों में स्वीकार किया है–

''राम तुम्हारा वृत्त स्वयंही
काव्य है,
कोई कवि बन जाये,
सहज सम्भाव्य है।''

3) सर्ग –

महाकाव्य में कम से कम आठ सर्ग होना आवश्यक है। कविने इससे भी बढकर 'साकेत' में बारह सर्गों का निर्माण किया है।

4) नायक –

महाकाव्य के तत्व या लक्षणों के आधार पर महाकाव्य का नायक या नायिका उच्च–कुलोत्पन्न, देव–कुलोत्पन्न होने चाहिए, साथही नायक धीरोदात्त होना चाहिए। 'साकेत' का आधार रामकथा होने पर भी राम इस काव्य के नायक नहीं हैं। नायक–नायिका के रूप में लक्ष्मण–उर्मिला को चित्रित किया गया है। दोनों उच्च कुल में उत्पन्न हुए हैं। लक्ष्मण धीरोदात्त नायक हैं। लक्ष्मण के उध्दत

स्वभाव का परिचय इस प्रकार है–

कैकयी के प्रति –

भरत को मार डालूँ और तुझको,
नरक में भी न रक्खूँ ठौर तुझको!

दशरथ के सन्दर्भ में–

बने इस दस्युजा के दास हैं जो,
इसीसे दे रहे वनवास हैं जो,
पिता हैं वे हमारे या–कहूँ क्या?
कहो हे आर्य! फिर भी चूप रहूँ क्या?

भरत के संबंध में राम का कहना नहीं मानते–

उनको इस शर का लक्ष्य चुनूँगा क्षण में,
प्रतिशेध आपका भी न सुनूँगा रण में!

5) छन्द –

'साकेत' का एक सर्ग एक ही छन्द में लिखा गया है। सर्ग के अन्त में छन्द परिवर्तन है। छन्दों का विवरण इस प्रकार है–

प्रथम सर्ग – मुख्य छन्द पीयुषवर्ष है, सर्ग के अन्त में चौपाई, रूपमाला छन्द हैं।
द्वितीय सर्ग – मुख्य छन्द श्रृंगार है, सर्ग के अन्त में प्लवंगम और हाकलि छन्द है।
तृतीय सर्ग – मुख्य छन्द सुमेरू है, सर्ग के अन्त मे सरसी और राम छन्द हैं।
चतुर्थ सर्ग – मुख्य छन्द मानव अथवा हाकलि है, सर्ग के अन्त में सार और तोमर छन्द है।
पंचम सर्ग – मुख्य छन्द प्लवंगम है, सर्ग के अन्त में धनाक्षरी और दोहा छन्द हैं।
षष्ठ सर्ग – मुख्य छन्द पदपादा कुलक है, सर्ग के अन्त में गीतिका और मधुमालती छन्द हैं।
सप्तम सर्ग – मुख्य छन्द चन्द्र या सरस है, सर्ग के अन्त में धनाक्षरी और समानिका छन्द .है।
अष्टम सर्ग – मुख्य छन्द राधिका है, सर्ग के अन्त में वीर और अरिल्ल छन्द हैं।
नवम् सर्ग – इस सर्ग में मन्दाक्रान्ता, द्रुतविलंबित, आर्या, दोहा, गीतिका आदि अनेक छन्दों .का प्रयोग हुआ है।
दशम सर्ग – मुख्य छन्द वियोगिनी है, सर्ग के अन्त में मालिनी और अनुष्टुप छन्द हैं।
एकादश सर्ग – मुख्य छन्द वीर और ताटंक हैं, सर्ग के अन्त में मनहरण, कवित्त और दोहा छन्द हैं।
द्वादश सर्ग – मुख्य छन्द रोला है, सर्ग के अन्त में उल्लाल्ला और उपजाति वृत्त छन्द हैं।

6) रस –

किसी भी महाकाव्य मे रस उत्पत्ति होनी आवश्यक है। 'साकेत' का मुख्य रस श्रृंगार है। अन्य रसों का भी प्रयोग प्रसंगानुरूप हुआ है।

7) प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन –

प्रातः काल, सन्ध्या, रात्रि आदि प्राकृतिक वर्णन यथास्थान किया गया है।

8) यात्रा, संग्राम, आखेट –

महाकाव्य में यात्रा–वर्णन, रण–संग्राम और आखेड होना आवश्यक है। 'साकेत' में इन सभी का वर्णन आवश्यकता के अनुसार हुआ है। राम के वनगमन के रूप में 'यात्रा–वर्णन', राम–रावण–युध्द के रूप में 'रण–संग्राम' मायावी हरिण मारीच वध के रुप में 'आखेट' का वर्णन कविने किया है।

9) फल –

अन्तिम फल के रूप में धर्म का स्वीकार किया है। इसके साथ ही साथ लक्ष्मण–उर्मिला के मिलन के रूप में चित्रित है।

'साकेत' बारह सर्गों का महाकाव्य तथा बृहत् प्रबन्धकाव्य है। 'साकेत' का कथानक रामकथा पर आधारित है, लेकिन रामकथा का वर्णन करना कवि का मुख्य उद्देश्य नहीं है। 'साकेत' का मुख्य उद्देश्य रामकथा के उपेक्षित पात्रों को प्रकाश में लाना है।

महाकाव्य के लिए घटना का ऐक्य होना आवश्यक है। इसीलिए गौण कथाओं का होना भी आवश्यक है। उर्मिला का विरह इस काव्य की प्रमुख घटना होने के कारण उर्मिला और लक्ष्मण का पुनर्मिलन प्रमुख उद्देश्य है। 'साकेत' की समस्त घटनाएँ, उसी ओर बढती है।

'साकेत' की कथा उस रामकथा से ली गयी है, जिसे आदिकवि वाल्मिकी और गोस्वामी तुलसीदासाने अपनी अमर लेखनीसे अमर कर दिया है। 'साकेत' में रामकथाने ही लक्ष्मण और उर्मिला के जीवन को अस्तित्व प्रदान किया है।

'साकेत' की कथा रामायन की ही कथा है। 'साकेत' अयोध्या का ही पौराणिक नाम है।

वस्तुविन्यास –

गुप्तजीने रामकथा को 'साकेत' में ज्यों का त्यों उतारा नहीं है। उसमें अपने उद्देश्य के अनुरूप परिवर्तन किया है, फिर भी मूल कथा में कोई अंतर नहीं आया है। रामकथा के प्रमुख पात्र 'साकेत' में गौण बन गये हैं। इस परिवर्तन से कथा में सुन्दरता के साथ–साथ उपयुक्तता का भी समावेश हुआ है।

प्रथम सर्ग के प्रेमालाप के बाद विरह की तीव्रानुभूति कराने में कवि सफल हुए हैं। विरह का कारण मन्थरा, कैकयी तथा राम का वनगमन है। इसके उपरान्त मेघानाद वध, रावन वध आदि घटनाएँ फल की ओर मुख्य कथा को बढाती है। तथा अन्त में उर्मिला–लक्ष्मण का मिलन फल के रूप में, मिलता है। इस प्रकार घटना का ऐक्य सिध्द हो जाता है। 'साकेत' घटना–प्रधान काव्य न होकर चरित्र–प्रधान काव्य है बहुत सी घटनाएँ जैसे– दशरथ मरण, गुहराज मिलन, चित्रकुट में सीता की गृहस्थी आदि के वर्णन का कथा से सहज संबंध नही है, इससे कथा में सुगठितता नहीं रही। यदि 'साकेत' में यह दोष है तो इसीसे 'साकेत' में नविनता तथा आधुनिकता आयी है।

1) चित्रकुट की पर्णकुटी में राम–सीता का मिलन बडा ही भावात्मक और चित्ताकर्षक है। इस प्रकार कविने उर्मिला से सम्बधित प्रसंगों की कल्पना करके उसके जीवन के विभिन्न पक्षों को उद्घाटित किया है। चौदह वर्षों के बाद हुआ उर्मिला और लक्ष्मण का मिलन भी बडा ही भावपूर्ण है–

लेकर मानो विश्व–विरह उस अन्तःपुर में,
समा रहे थे, एक दूसरे के वे उर में।

2)चित्रकुट प्रसंग में कैकयी को अपनी भूल सुधारने का अवसर कविने दिया है। अन्य रामकथाओं में कैकयी को अपनी भूल सुधारने का मौका नहीं दिया गया है, यह गुप्तजी की अपनी कल्पना है। चित्रकूट प्रसंग में कैकयी के हृदय में मातृत्व और वात्सल्य भाव जाग उठता है। किये हुए अपने दुष्कृत्य पर कैकयी अपने आपको धिक्कारती है–

युग युग तक चलती रहे कठोर कहानी–
'रघुकुल में भी थी एक अभागीन रानी।'
निज जन्म–जन्म में सुने जीव यह मेरा–
'धिक्कार! उसे था महा स्वार्थ ने घेरा।'

उसके चरित्र की यह उदात्तता है जो पश्चाताप की अग्नि में धुलकर साफ–सुथरे चरित्र के रूप में सामने आयी है।

3)चित्रकुट मिलन के बाद की सभी घटनाएँ घटित होती नहीं दिखाई गई है, वह वर्णित है। बालकाण्ड की कथा–उर्मिला, अरण्यकाव्य की कथा–शत्रुघ्न, किष्किंधा और लंकाकाण्ड की कथा हनुमान कहते हैं। युध्द का दृश्य वशिष्ठजीने दिव्य दृष्टि प्रदान कर सांकेतिक किया है।

4)सबसे महत्वपूर्ण तो उर्मिला से सम्बन्ध रखनेवाली, सभी घटनाएँ ही कवि की अपनी कल्पना हैं। पुष्पवाटिका में केवल सीता ही राम की ओर आकर्षित नहीं होती, उर्मिला भी लक्ष्मण को देखकर उन पर मुग्ध हो जाती है। यह प्रसंग अन्य रामकथाओं में नहीं है इसको साकेतकारने अपनी कल्पना से निर्माण तथा अंकित किया है। इसी में उर्मिला के बाल्यावस्था का भी वर्णन हुआ है।

5)अन्तिम दो सर्गों मे माण्डवी का चरित्र उभरकर सामने आता हैं–

चार चुडियाँ थी हाथो में,
माथे पर सिन्दुरी बिन्दु,
पीताम्बर पहने थी सुमुखी,
कहाँ असित नभ का वह बिन्दु?

6)हनुमान को संजीवनी बूटी लाने के लिए हिमालय पर जाने की आवश्यकता नहीं है। यह संजीवनी बूटी एक योगी से भरत को मिली थी, तो वह बूटी हनुमान को अयोध्या में ही मिल जाती है। इस संजीवनी बूटी की चर्चा भरत ही करते हैं–

मानसरोवर से आये थे
सन्ध्या समय एक योगी,
मृत्युंजय की ही यह निश्चय
मुझपर कृपा हुई होगी।
वे दे गये मुझे औशधि
संजीवनी नाम जिसका,
क्षत–विक्षत जन को भी जीवन
देना सहज काम उसका।

7)कथानक में अयोध्यावासियों की रणसज्जा को दिखाकर कविने इस प्रसंग की नवीन कल्पना की है। अन्य रामकथा में यह प्रसंग नहीं है।

उठी क्षुब्ध–सी अहा! अयोध्या की नर–सत्ता,
सजग हुआ साकेत पुरी का पत्ता–पत्ता।
भय–विस्मय को शूर–दुर्प ने दूर भगाया,
किसने सोता हुआ यहाँ का सर्प जगाया।
प्रिया–कण्ठ से छूट सुभट–कर भास्त्रों पर थे,
त्रस्त–वधू–जन–हस्त स्त्रस्त–से वस्त्रों पर थे।

8)राजमहल के अन्दर विरहीणी उर्मिला का वीरांगना के रूप में युध्द के लिए तैयार होना कवि की अपनी कल्पना है। जिससे विरहीणी नायिका उर्मिला का चरित्र उभरकर सामने आता है–

ठहरो, यह मैं चलूँ किर्ति–सी आगे–आगे,
भोगें अपने विषय कर्म–फल अधम अभागे!
भाल भाग्य पर तने हुए थे तेवर उसके,

9) वशिष्ठजी की दिव्यदृष्टि की योगशक्ति भी गुप्तजी की अपनी कल्पना है। यह प्रसंग इसके पहले की रामकथाओं में नहीं हैं। अपनी योगशक्ति के द्वारा साकेतवासियों को एक दिव्य दृष्टि प्रदान कर, उन्हें राम–रावण–युध्द, मेघनाद वध आदि प्रसंग अयोध्या में ही दिखा दिये। हनुमान के मुख से सीता–हरण और लक्ष्मण मुर्च्छा का समाचार पाकर सारी अयोध्या एक विशाल सशस्त्र युध्दोत्सुक सेना में परिणत हो जाती है, तब गुरू वरिष्ठ ही सबको शांत करते हैं और अयोध्या में ही रण–संग्राम दिखाते हैं–

अच्छा, लो, सब इधर क्षितिज की ओर निहारो।

10)चित्रकुट की सभा अन्य रामकथाओं से भिन्नता लिए हुए है। कविने इसे पारिवारिक घटना के रूप में प्रस्तूत किया है। कैकयी राम से कहती है–

यह सच है तो अब लौट चलो तुम घर को।

वह आगे अपनी ही भर्त्सना खुद करती है–

थूके, मुझ पर त्रैलोक्य भले ही थूके,
जो कोई जो कह सके, कहे, क्यों चूकें?
– – – – – – – – – – – – – –
युग–युग तक चलती रहे कठोर कहानी–
रघुकुल में भी थी एक अभागिन रानी।

11)अन्य रामकथाओं के गौन पात्रों का कविने केवल उल्लेख किया है। जैसे– शबरी का आतिथ्य, शूर्पणखा प्रसंग, गुहराज मिलन, अहल्या उध्दार, सुबाहु प्रसंग, जटायु मृत्यू आदि कथाओ का केवल उल्लेख मिलता है।

12)कहीं–कहीं पर कविने लीक से हटकर कथायें कही हैं। 'साकेत' में स्वावलंबिनी सीता का वर्णन किया है। यह प्रसंग कथा से सीधा सम्बन्ध नहीं रखता। इससे कथा में बाधा आती है; यदि यह प्रसंग न भी होता तो काम

चल सकता था, क्योंकि 'साकेत' की नायिका उर्मिला है, सीता नहीं। उर्मिला से सम्बाधित और एखाद प्रसंग डाल दिया होता तो और भी ठीक होता।

सीता का स्वावलंबन इस प्रकार चित्रित है–

औरों के हाथों यहाँ नहीं पलती हूँ,
अपने पैरों पर खडी आप चलती हूँ।

13)उर्मिला के बचपन, संयोग, वियोग, पूर्वराग, पूनर्मिलन आदि घटनाएँ कवि की अपनी कल्पना की निर्मिती है।
14)माण्डवी और श्रुतिकीर्ति के दाम्पत्य जीवन की झलक गुप्तजी से पूर्व किसी भी कविने नहीं की है।
15)राम–रावण युध्द में लक्ष्मण के शक्ति लगने पर राम मोहाभिभूत होकर विलाप नहीं करते, वह संतप्त होकर प्रलय मचा देते है–

मैं आर्यों का आदर्श बताने आया,
जन–सम्मुख धन को तुच्छ जताने आया।
सुख शान्ति– हेतू मैं क्रांति जताने आया,
विश्वासी का विश्वास बचाने आया।
– – – – – – – – – – – – –
स्‍देश यहाँ मैं नही स्वर्ग का लाया,
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया।

16)भरत की अनुपस्थिति के कारणों को भी उर्मिला–लक्ष्मण वार्तालाप और दशरथ के शब्दों के द्वारा स्पष्ट किया है–

इसका है हम सबको खेद।
किन्तू अवसर था इतना अल्प,
न आ सकते थे शुभ–संकल्प।

संदर्भ ग्रंथ –

- मैथिलीशरण गुप्त– व्यक्ति और काव्य– डॉ. कमलाकांत पाठक
- साकेत – मैथिलीशरण गुप्त
- साकेत – एक अध्ययन – दानबहादूर पाठक